Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 12 | SPECIAL ISSUE DECEMBER-2024

बहुविषयक शिक्षा : चुनौतियां एवं समाधान

दयाशंकर शोध छात्र, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर.

ABSTRACT:

बहु विषयक शिक्षा एक व्यापक दृष्टिकोण है जो छात्रों को विभिन्न विषयों एवं कौशलों को समन्वित करके एक समग्र शिक्षा प्रदान करती है जिससे छात्र केवल एक विषय तक सीमित न रहकर वे विभिन्न दृष्टिकोणों से सोच सकें, किसी समस्या का समाधान प्रस्तुत कर सके तथा अपनी सृजनात्मक क्षमता का विकास कर सके।

बहु विषयक शिक्षा कोई नवीन विचार नहीं है इसके दर्शन प्राचीन शिक्षा प्रणाली में भी होते हैं जहां वेद पुराण खगोल शास्त्र आयुर्वेद के साथ साथ अनेक कौशलों का ज्ञान कराया जाता था किंतु वर्तमान वैश्वीकरण के युग में जहां दुनिया तेजी से बदल रही है सृजनात्मकता, नवाचार का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। ऐसे में यह शिक्षा भविष्य में आने वाली चुनौतियों का समाधान करने में मददगार साबित हो रही है। वर्तमान समय में इस शिक्षा की आवश्यकता इस बात से है कि आज ऐसे व्यक्तियों की मांग है जो किसी एक क्षेत्र के विशेषज्ञ न होकर विभिन्न क्षेत्रों का ज्ञान रखते हो क्योंकि किसी भी समस्या का समाधान एक तरीके से संभव नहीं है उस समस्या को विभिन्न विषयों एवं दृष्टिकोण के समन्वय से हल किया जा सकता है। यह प्रणाली नित नवीन समस्याओं के समाधान हेतु नवीन ढंग से सोचने, नई संभावनाओं का पता लगाने के लिए छात्रों में नवाचारों एवं सृजनात्मक शक्ति का विकास करने की क्षमता प्रदान करती है। बहु विषयक शिक्षा छात्रों के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करती है।इसकी महत्ता को देखते हुए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बहुविषयक शिक्षा पर बहुत जोर दिया गया है। इस शिक्षा नीति में छात्रों को अपने विषय के चुनाव की पूरी स्वतंत्रता है साथ ही विभिन्न विषयों के बीच की जो दूरी है उसे कम करने का प्रयास किया गया है जिससे छात्रों में करियर विकल्प चुनने में आसानी हो सके उनमें सृजनात्मक एवं नवाचार की क्षमता का विकास हो सके,छात्र अपनी बदलती परिस्थितियों के अनुरूप अपने आप को ढाल सके तथा अपने समक्ष आने वाली समस्याओं को अपनी समझ एवं शक्ति से हल कर सके। परंतु इस शिक्षा को पूर्ण रूप से प्रभावी बनाने में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है लेकिन सही नीतियों तथा सरकारी एवं व्यक्तिगत प्रयासों से इन चुनौतियों को दूर किया जा सकता है।

KEYWORDS:

-

प्रस्तावना:

शिक्षा किसी भी समाज की रीड़ होती है शिक्षा के द्वारा राष्ट्र,समाज तथा समाज में रहने वाले व्यक्तियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास संभव होता है। इसी उद्देश्य एवं आदर्शों को ध्यान में रखकर प्रत्येक राष्ट्र अपने राष्ट्र के नागरिकों के विकास के लिए शिक्षा नीतियों का निर्धारण करता है। शिक्षा राष्ट्रीय उद्देश्यों को प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। यदि हमें शिक्षा को एक राष्ट्र निर्माण कार्य उपकरण के रूप में उपयोग करना है तो इसके लिए शिक्षा की निश्चित नीतियों का निर्धारण करना आवश्यक है। हम ज्ञान युग में प्रवेश कर चुके हैं मनुष्य ने अपने कदम चंद्रमा तक पहुंचा दिए हैं, बिग डेटा,मशीन लर्निंग एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (A.I.)के क्षेत्र में हुए तकनीकी आविष्कारों ने मनुष्य के कार्य को समाप्त कर दिया है अब मनुष्य का स्थान मशीन, रोबोट आदि ने ले लिया है जिसके परिणाम स्वरूप डाटा साइंस, कंप्यूटर साइंस और गणित की क्षेत्र में ऐसी व्यक्तियों की मांग बढ़ी है जो विज्ञान, समाज विज्ञान तथा मानविकी के विविध विषयों में योग्यता रखते हो। वर्तमान तकनीकी युग में बहु विषयक शिक्षा का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है यह शिक्षा न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है बल्कि समाज के समग्र विकास व नवाचारों के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है। बहु बिषयक शिक्षा का विचार कोई नवीन नहीं है समग्र और बहु विषयक तरीके से सीखने की प्राचीन परंपरा रही है तक्षशिला एवं नालंदा विश्वविद्यालय में विभिन्न विषयों का ज्ञान समन्वित रूप से कराया जाता था बाणभट्ट की कादंबरी में शिक्षा की 64 कलाओं का ज्ञान का वर्णन मिलता है इन कलाओं में था केवल गायन और चित्रकला जैसे विषय सम्मिलित थे बल्कि वैज्ञानिक क्षेत्र के रसायन शास्त्र और गणित, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई अभियांत्रिकी तथा औषधि विज्ञान जैसे विषय

शामिल थे।इसके साथ-साथ संप्रेषण, चर्चा और वाद- विवाद करने के व्यावहारिक कौशल भी शिक्षा में शामिल थे। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जिनसे ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में विभिन्न विषयों का ज्ञान एक साथ कराया जाता था।

बहुविषयक शिक्षा का उद्देश्य एवं महत्व:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समग्र एवं बहु विषयक शिक्षा पर बहुत बल दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में देश के सभी उच्च शिक्षण संस्थानों को बहू विषयक बनाने का लक्ष्य रखा गया है,जहां छात्रों को अपनी रुचि के अनुसार विषय चुनने की पूरी स्वतंत्रता है,केंद्रीय आधारित प्रणाली का विकास, व्यावसायिक एवं अकादमिक शिक्षा के बीच समन्वय पर जोर दिया गया है। इससे छात्रों में एक व्यापक दृष्टिकोण का विकास होता है।तथा इन्हें वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार किया जा सकता है।बहु विषयक शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की सभी क्षमताओं- बौद्धिक, सौंदर्यात्मक, समाजिक, शारीरिक, भावात्मक तथा नैतिक को एकीकृत रूप से विकसित करना है।यह शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास में सहायता करती है। यह शिक्षा छात्रों में न केवल व्यवसायिक कौशल का विकास करती है बल्कि व्यवहारिक कौशल जैसे - संप्रेषण, चर्चा, वाद-विवाद और एक चुने हुए क्षेत्र क्षेत्र में अच्छी विशेषज्ञ हासिल करने में मदद करती है जिसे सॉफ्ट स्किल के रूप में जाना जाता है।यह शिक्षण पद्धति (विज्ञान तकनीकी अभियांत्रिकी और गणित) के साथ मानविकी और कला शिक्षा को समाहित करती है तो रचनात्मकता और नवाचार, आलोचनात्मक चिंतन एवं उच्च स्तरीय चिंतन, समस्या समाधान की योग्यता, समूह में कार्य करने विशेषज्ञ सहित सकारात्मक शैक्षिक परिणाम प्राप्त करने में सहायक होती है।अतः यह शिक्षा 21वीं सदी के भारत की प्रमुख आवश्यकता है इसे भारतीय शिक्षा प्रणाली में अनिवार्य रूप से शामिल करना चाहिए।

चुनौतियां एवं समाधान:

शिक्षा प्रणाली छोटे एवं ग्रामीण क्षेत्र के स्कूल एवं कॉलेजों में अनेक विषय उपलब्ध कराने में एक बड़ी समस्या सामने आ रही है यदि उपलब्धता हो भी जाती है तो इन विषयों को पढ़ाने के लिए शिक्षकों के प्रशिक्षण की उचित व्यवस्था नहीं है जिसके अभाव में छात्र ऐसे विषयों को समझने में असमर्थता व्यक्त करते हैं और उनमें समग्र दृष्टिकोण का विकास नहीं हो पता है। एक महत्वपूर्ण तथ्य भी है कि हमारी परीक्षा प्रणाली एवं मूल्यांकन प्रणाली दोषपूर्ण है वर्तमान में प्रचलित मूल्यांकन प्रणाली छात्रों के समग्र विकास का मूल्यांकन करने में सक्षम नहीं है। बहुविषयक शिक्षा प्रणाली में देश के लोगों की रूढ़िवादिता एवं जड़ता एक बाधक तत्व है। अधिकांश लोग परंपरागत शिक्षा प्रणाली को उचित एवं श्रेष्ठ समझते हैं और इसी को प्राथमिकता देते हैं जो बहु विषयक शिक्षा के प्रभावी होने में एक बड़ी चुनौती है। समय रहते यदि इन चुनौतियों को स्वीकार कर इनका समाधान किया जाए तो बहू विषयक शिक्षा के सकारात्मक दूरगामी प्रणाम प्राप्त हो सकते हैं। इसके लिए समाज में बहुविषयक शिक्षा के महत्व को बता कर सामाजिक जागरूकता लाई जाए, शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाए, छात्रों को ऑनलाइन शिक्षा एवं तकनीकी सहायता प्रदान की जाए तथा शासन स्तर पर बनने वाली नीतियों का सरकारी एवं व्यक्तिगत स्तर पर उचित क्रियान्वयन एवं अनुपालन किया जाए तो बहुत कुछ हद तक इस शिक्षा की चुनौतियों से निपटा जा सकता है।

निष्कर्ष:

बहुविषयक शिक्षा को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए भारत जैसे प्रगतिशील एवं विविध संस्कृति वाले देश में इसकी माहती आवश्यकता है। बहुविषयक शिक्षा छात्रों को न केवल विषय विशेषज्ञ तक सीमित रखती है वरन उनमें एक समग्र दृष्टिकोण का विकास करती है तथा सोचने समझने की शक्ति प्रदान करती है। यह छात्रों को केवल नौकरी से तक सीमित नहीं करती बल्कि उन्हें समाज का एक योग्य नागरिक बनाने में सहायता करती है जिससे वह स्वयं अपना तथा समाज के निर्माण में अपनी सकारात्मक भूमिका अदा कर सके।

REFERENCES

1. डॉ. मालती सारस्वत एवं एस. एल. गौतम, भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक समस्याएं।
2. बी.पी. जौहरी एवं पी.डी. पाठक, भारतीय शिक्षा का इतिहास।
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
4. एस.पी. गुप्ता, भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याएं। 7-स्व अध्ययन